International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-02-2019; Accepted: 11-03-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 10-13

वर्तमान के सन्दर्भ में नदी के द्वीप उपन्यास की प्रासंगिकता

डॉ. बिउटि दास
असिस्टेंटप्रोफेसर, हिंदीविभाग, बंगाइगाव कॉलेज, असम, भारत।

सारांश
अज्ञेय कृत नदी के द्वीप एक मनोवैज्ञानिक विचारप्रधान बौद्धिक उपन्यास है। आज के व्यस्ततापूर्ण जीवन शैली में व्यक्ति अपनी अस्तित्व की संकट को लेकर अत्यधिक चिन्तित रहते हैं। व्यक्ति की सत्ता समाज सापेक्ष है। समाज में रहकर व्यक्ति अपनी निजी अस्तित्व, पहचान बनाने के लिए सदा जागरूक रहते हैं। जीवन के इस प्रवाह में न जाने कितनी बार व्यक्ति बनता है, मिटता है और पुनः निर्माण होता है। अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए वे विषम परिस्थितिओं से लड़ता है, संघर्ष करता है। वस्तुतः नदी के द्वीप उपन्यास एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। यहाँ प्रयुक्त नदी का सांकेतिक अर्थ समाज के संदर्भ में हुआ है और द्वीप का सांकेतिक अर्थ व्यक्ति के संदर्भ में हुआ है। साधारणतः व्यक्ति और समाज दोनों ही एक-दूसरे के अभिन्न अंग है ठीक नदी में स्थित द्वीप की तरह। एक को छोड़क्रर दूसरी की कल्पना नहीं किया जा सकता है। समाज में व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास होता है।सामाजिक रीति-नीति, आचार-व्यवहार, कला-संस्कृति आदि समाज जीवन के अपरिहार्य अंग है और व्यक्ति मानवीय मूल्यबोध, गरिमापूर्ण जीवन, आचार संहिता आदि व्यक्ति जीवन के अनिवार्य उपलब्धि को समाज जीवन से ग्रहण कर मर्यादादित जीवन जीने का ढंग अपनाते है। परन्तु व्यक्ति समाज जीवन में रहकर अपनी सत्ता में बिलकुल स्वतंत्र रहना चाहते हैं। अपने आपको सम्पूर्णविलीन कर देने में अपनी सार्थकता का अनुभव नहीं करते हैं। जिस प्रकार नदी की धारा में स्थित द्वीप धारा से घिरे एवं सम्पृक्त होकर भी द्वीप कभी अपनी द्वीपवत अवस्था से बाहर नहीं आतेठीक उसी प्रकार व्यक्ति भी समाज जीवन के प्रवाह में सम्पृक्त होकर भी अपनी अस्तित्व को समाज जीवन की धारा में विलीन कर देना नहीं चाहते हैं। द्वीप नदी की धारा से कटे होकर भी कहीं न कहीं नदी की धारा के किसी विन्दु पर वह जुड़े हुए है। व्यक्ति के लिए भी समाज निरपेक्ष नहीं है। अपनी विचार, चिंतन, तर्क. दर्शन, अनुभूति आदि से स्वतंत्र किन्तु उनका भी मूल्य सामाजिक जीवन के परिप्रेक्ष में देखा जाता है। प्रस्तुत उपन्यास के केंद्रीय सभी पात्र उच्च शिक्षित बौद्धिक पात्र है। उसकी संवेदना साधारण लोगों की संवेदनाओं से पृथक है। प्रस्तुत उपन्यास में समाज जीवन की झाँकी चित्रित करना उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य निहित नहीं है बल्कि एक विशेष वर्ग के जीवन का सच्चा चित्रण मनोविश्लेषणात्मक ढंग से उपस्थापन करना उपन्यासकार का तिरोहित लक्ष्य रहा है।क्या आज के समाज में भी रेखा, भुवन, गौरा जैसे एक विशेष वर्ग के प्रतिनिधि स्वरूप यह पात्र विद्यमान नहीं है ? अहं, यौन-क्षुधा, प्रेम, कुंठा, मानसिक अंतर्द्वन्द से पूर्ण मध्यमवर्गीय उच्चशिक्षित वर्ग के जीवन संवेदनाओं से क्या प्रस्तुत उपन्यास आज भी साम्यता रखता है ? आज के बौद्धिक, विचारशील, संवेदनशील व्यक्ति के संवेदनाओं के कसौटी में नदी के द्वीप उपन्यास की प्रासंगिकता क्या है ? मेरे इस शोध पत्र का अभिप्राय वर्तमान के संदर्भ में नदी के द्वीप उपन्यास की प्रासंगिकता के ऊपर पैनी दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत करना।

मूल शब्द : व्यक्ति, समाज, नदी, द्वीप, आंतरिक उलझन, मनोविश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना
नदी के द्वीप उपन्यास एक व्यक्तिवादी चरित्रप्रधान उपन्यास है। यहाँ आदि से अंत तक कथावस्तु का प्रवाह केंद्रीय पात्रों रेखा, भुवन, गौरा और चन्द्रमाधव के माध्यम से प्रवाहित होते हैं। इन चार पात्रों के अलग अलग आंतरिक संवेदनाओं की विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति करना प्रस्तुत उपन्यास की मूल संवेदना है और इस शोध पत्र में इन पात्रों में निहित चारित्रिक विशिष्टता के आधार पर वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत उपन्यास की प्रासंगिकता को विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

रेखा एक उच्च शिक्षित, संवेदनशील, स्थिर सिद्धांतवादी और अपनी पति द्वारा उपेक्षित परन्तु अपने आप में स्वतंत्र चिंतन रखनेवाली पूर्ण स्वाभिमानी विदुषी महिला है। भुवन पढ़ा-लिखा उच्च शिक्षित ऐसा एक युवक है जो विज्ञान के प्रोफेसर होने के साथ-साथ पदार्थ विज्ञान से जुड़े कस्मिक रश्मिओं के अन्वेषण के कार्य में सदा व्यस्त जीवन व्यतीत करने में समर्पित है।गौरासंस्कारी, अंतर्मुखी, सहृदया, उच्चशिक्षित ऐसी एक युवती है जो एक संगीत शिक्षिका होने के साथ-साथ प्रेम में पूर्ण आस्था रखनेवाली एक असाधारण, अनन्य पात्र है।प्रस्तुत उपन्यास के एकमात्र खलनायक पात्र चन्द्रमाधव पेशे से एक पत्रकार की भूमिका अदा करता है और दूसरी ओर अपनी स्वार्थ की सिद्धि के लिए वह किसी भी हद तक जाने के लिए संकोच का अनुभव नहीं करते। व्यवसायी तथा रेखा के पति हेमेंद्र और डॉ रमेशचंद्र उपन्यास में दो ऐसे पात्रों है जो केंद्रीय पात्रों तो नहीं है किन्तु कथावस्तु के प्रवाह को कभी-कभी एक नई मोड़ देने में वे अहम भूमिका अदा करते हैं।

नदी के द्वीप उपन्यास में पात्रों के जीवनानुभूतिओंको सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से विश्लेषण किया गया है। पत्रकार मित्र चन्द्रमाधव के लखनऊ स्थित निवास में कुछ दिनों के लिए अतिथि बनकर आये भुवन का भेंट संयोगवश रेखा से होती है और इन सात दिनों का आपसी परिचय एक -दूसरे को अधिक निकट ले जाते हैं। उन दिनों हजरतगंज की काफी हॉउस में बैठकर चन्द्रमाधव, भुवन, रेखा विभिन्न विषयों को लेकर चर्चा करते हैं,कभी उनके चर्चा के विषय में प्रेम, तथ्य, पेनफुल सत्यतो कभी ऋषि और ईश्वर आदि न जाने कितनी नई-नई विषय को लेकर अपनी तर्क, चिंतन, अनुभूति आदि का बौद्धिक आदान-प्रदान होते हैं | हजरतगंज की काफी हॉउस में हुआ पहली ही मुलाकात में रेखा भुवन को कहती है-

हाँ, मगर सचमुच सेतु बन सके तो दोनों ओर से रौंदे जाने में भी सुख है, और रौंदे जाकर टूटकर प्रवाह में गिर पड़ने में भी सिद्धि। पर मै तू कह रही हूँ कि मै तो उतनी कल्पना भी नहीं कर पाती- मै तो समझती हूँ,हम अधिक से अधिक इस प्रवाह में छोटे-छोटे द्वीप है, उस प्रवाह से घिरे हुए भी, उससे कटे हुए भी; भूमि से बंधे और स्थिर भी, पर प्रवाह में सर्वदा असहाय भी- न जाने प्रवाह की

एक स्वैरिणी लहर आकर मिटा दे, बहा ले जाये, फिर चाहे द्वीप का फूल-पत्ते का आच्छादन कितना ही- सुन्दर क्यों न रहा हो !' [1]

जीवन के तीखी अनुभवों से पुष्ट रेखा के व्यक्तित्व में एक अदभुत शक्ति थी, गंभीर से गंभीर विषयों पर युक्तिपूर्ण तर्क के द्वारा लोगों को प्रभावित करने की अदभुत क्षमता उसमे विद्यमान थी और अपनी जीवनानुभूति परक दर्शन से अपनी लीकें स्वंय निर्धारित करने की पूर्ण सामर्थ उनमे थी। व्यक्तित्व की इन विशेषताओं के कारण भुवन रेखा के प्रति एक तीव्र आकर्षण का अनुभव करते थे। भुवन के द्वारा कहे गए कथन की "आप समर्थ है, रास्ता बनती चलती है, हम दूसरों की बनायी हुई लीक पीटते हैं-"[2]

रेखा की अपनी युक्तिनिष्ठ तर्क भुवन के चिंतन को झकझोर कर डालते हैं। यथा-

'दूसरों की बनायी हुई लीकों की बात मै नहीं सोच रही थी। व्यक्तित्व की अपनी लीकें होती हैं- एक रुझान होता है। और उसके आगे, व्यक्ति अपने वर्तमान और भविष्य के बारे मेँ जो समझता है, जो कल्पना करते है, मंसूबे बाँधता है, उनसे भी तो एक लीक बनती है- लीक कहिए. चौखटा कहिए, ढाँचा कहिए। या कह लीजिए, दुनिया मेँ अपना एक स्थान। मेरा मतलब नहीं था। आपके सामने- ऐसा मेरा अनुमान है- भविष्य का एक चित्र है, कहीं मंजिल है, ठिकाना है। इसीलिए रास्ता भी है-'[3]

क्षण की अनुभूति को सनातन माननेवाली रेखा के आगे काल का प्रवाह भी प्रवाह नहीं है। क्षणजीवी रेखा अतीत और भविष्य के क्षण को लेकर नहीं बल्कि शुद्ध वर्तमान क्षण में ही जीना चाहती है। यथा-

"मुझे सब रास्ते एक साथ दीखते है ...और हर रास्ते के आगे एक मंजिल भी दिखती है, जिसे मरीचिका मानना कठिन है...और इसीलिए सब मंजिले झूठ हो जाती है, और कोई रास्ता नहीं रहता। मैं सचमुच कहीं भी पहुँचना नहीं चाहती- चाहना ही नहीं चाहती। मेरे लिए काल का प्रवाह भी प्रवाह नहीं, केवल क्षण और क्षण और क्षण का योगफल है- मानवता की तरह ही काल-प्रवाह भी मेरे निकट युक्ति-सत्य है, वास्तविकता क्षण ही की है। क्षण सनातन है।"[4]

इसी क्षण की अनुभूतिओं में जीने के कारण ही रेखा को कभी लखनऊ, प्रतापगढ़, कश्मीर, पहलगाऊँ, तुलियन आदि जगहों में भटकते हुए मूल्यवान समय के सनातन क्षण की अनुभूतिओं से रूवरू होता हुआ हमें परिलक्षित होते हैं। इसलिए तुलियन झील में चांदनी रात भुवन के साथ आत्मिक संबंध स्थापित करने का वह पल, रेखा के लिए उनकी सम्पूर्ण जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण ही नहीं बल्कि उस क्षण के प्रति रेखा इतने कृतज्ञ है कि इस क्षण में ही वह अपनी जीवन की पूर्णता का अनुभव करती है। जीवन के इस प्रवाह में इधर-उधर भटकनेवाली रेखा के उस भटकन में भी एक प्रेरणा थी, शक्ति थी, सुख थी और उसकी सम्पूर्ण जीवन की पूर्णता-अपूर्णता, सफलता-विफलता का आंकलन भी थी।

इस संदर्भ में रेखा की अपनी दृष्टिकोण हमें आश्चर्यचकित करते हैं

"ऊपर पहुँचकर रेखा ने एक बार चारों ओर देखा था, रुक-रुक-कर, मानो एक-एक स्थल के दृष्टि में बसाते हूए, स्मृति की गाँठ बाचते हूए; फिर कहा था, भुवन, जाने से पहले में एक बात कहना चाहती हूँ। आई ऍम फुलफील्ड। अब अगर मैं मर जाऊँ तो परमात्मा के प्रति- प्रकृति के प्रति- यह आक्रोश लेकर नहीं जाऊँगी कि मैंने कोई भी फुलफिलमेंट नहीं जाना- कृतज्ञ भाव ही लेकर जाऊँगी- परमात्मा क़े प्रति और-भुवन तुम्हारे प्रति।"[5]

रेखा एक स्वतंत्र, अत्यंत साहसी, किसी विपरीत परिस्थितिओं में भी अपनी अंतरंग जीवन का निर्णय स्वंय लेने में सामर्थ रखनेवाली महिला है। अपनी व्यक्तिगत जीवन में दुसरो क़े अप्रत्याशित हस्तक्षेप को वह कदाचित पसंद नहीं करते और ऐसी कोई परिस्थिति आने से वह तुरंत मुकाबला करने के लिए भी तैयार रहती हैं। इसलिए पूर्व व्यवसायी पति हेमेंद्र के साथ विवाह विच्छेद करने में वह तनिक भी टूट नहीं जाती बल्कि पत्नी को एक यंत्र के रूप में व्यवहार करनेवाला, अन्य विदेशी महिला के साथ अवैध सम्पर्क रखनेवाला, पत्नी की मर्यादा देने में इंकार करनेवाला ऐसे पति से विवाह जैसे पवित्र वंधन को तोड़ने मेँ पल-भर के लिए भी विचलित नहीं हूवे। दूसरी ओर भुवन के साथ मुक्त रूप से सम्भोग करने में अपनी जीवन की चरम उपलब्धि माननेवाली रेखा उस समय में भी अपनी फैसला में स्थिर रहता हुआ हमें नजर आते हैं, जब रेखा और भुवन दोनों के किसी विशेष क्षण के फलस्वरूप उन दोनों के जीवन में आनेवाले सम्भाव्य संतान को रेखा स्वेच्छा से गर्भपात करने का निर्णय ले लेती है। जीवन के अनेक अंतरंग क्षण एकसाथबिताने के बाद भी भुवन कभी अपने रिश्ते केबारे में, या दोनों के विवाह के बारे में अपना विचारप्रकट करने में असमर्थ थे लेकिन हालत से मजबूर होकर भुवन के द्वाराविवाह के लिए आग्रह किये गए प्रस्ताव को रेखा विनयपूर्वकनकारती हुई कहती है-

'मैंने तुमसे प्यार माँगा था, तुम्हारा भविष्य नहीं माँगा था, न में वह लूँगी.'[6]

प्रस्तुत उपन्यास के अन्य एक मुख्य नारी पात्र गौरा भी एक स्वतंत्र, जीवन की अहम फैसले में स्थिर, सुशिल, दिल से साफ, प्रेम में श्रद्धा और आस्था रखनेवाली उच्चशिक्षिता युवती है। बचपनमें गौरा को पढ़ानेवाला भुवन के प्रति बढ़ती उम्र के साथ-साथ उसमें प्रगाढ़ प्रेम के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। भुवन के प्रति गौरा के दिल में इतनी गहरी संवेदना थी की उनके विवाह के लिए आये अन्य सभी प्रस्ताव को वह ठुकराती है हालाँकि उस समय गौरा यह भी नहीं जानती कि भुवन के दिल में उसकी प्रति क्या संवेदनाये हैं। क्या गौरा को भविष्य जीवन में भुवन जीवन संगी के रूप में चुन सकेंगे ? चंद्रमाधव से प्राप्त पत्र के द्वारा भुवन और रेखा के गहरी संबंध के बारे में जान कर भी अपनी प्रेम में वह एकनिष्ठ होकर ही चलती है और भुवन के सामने इसके बारे में कभी कोई जिक्र भी नहीं किया, इससे गौरा के हृदय में भुवन के प्रति रहा उसकी अटल विश्वास को ही दर्शाता है। 'प्रेम' सिर्फ एक शब्द ही नहीं, ये तो ईश्वर की एक अनमोल वरदान है, दुनिया की सारी सुंदरता, सारी सृजनता इसमें समाहित है, मनालिचा का वह चित्र, ताजमहल जैसे अनमोल सौंध जो कुछ भी अनमोल रत्न हमारे पास है ये तो अमर प्रेम का ही मनुष्य को दिया हुआ एका-एक तोफा है।

गौरा के हृदय में भुवन के प्रति समाया हुआ स्वर्गीय प्रेमानुभूतिओं को फिर से एक बार गहराई से आत्मोपलब्धि करने के लिए एकांत में बैठकर वह अपनी कॉपी में आंतरिक भावनाओं को इसप्रकार शब्दबद्ध करने की कोशिश करती है-

'सचमुच मेरे जीवन का सबसे बड़ा इष्ट यही है कि तुम्हे सुखी देख सकूँ- तुम्हारा वरण ठीक कर सकूँ। मेरे स्नेह- शिशु, मै तुम्हारे ही लिए जीती हूँ, क्योकि तुममें जीती हूँ... मेरा सहज बोध मुझे बताता था- पर तुम दूर थे, तुम और दूर भागते रहे, और मैं विश्वास नहीं जूता पाती थी- मैं अन्तर्यामी तो नहीं हूँ। मैंने मान लिया, भक्त कवि ही ठीक कहते हैं, प्रिय को पाना ही निष्पत्ति नहीं है, विरह का भी रस है और वह रस भी एक मार्ग है... मेरे शिशु, स्नेह शिशु ! भक्तों ने जो कृष्ण के बाल-रूप की है, वह बहुत बड़ी कल्पना है... जिसे मैं गोद खिलाती हूँ, वह अवतार भी है, भगवान भी है- यशोदा जिसे पालने डुलाती है, वात्सल्य देती है, उसी को अपार श्रद्धा भी देती है, राधा जिस दही चोर को धमकाती है,

[1] **नदी के द्वीप पृष्ठ-२२**

[2] नदी के द्वीप-३५

[3] नदी के द्वीप, पृष्ठ: ३५

[4] नदी के द्वीप, पृष्ठ: ३५-३६

[5] नदी के द्वीप, पृष्ठ: १५९

[6] नदी के द्वीप, पृष्ठ: २१४

उसी के पैर भी पूजती है- कोई भी प्यार नहीं है जो वत्सल नहीं है, कोई भी दान नहीं है जो विनीत नहीं है... तुम मेरा भविष्य हो, इसलिए मैं तुम्हे बनाती हूँ। आग से तुम नहीं डरोगे अब- किसी चीज से नहीं डरोगे ! आग को मैं सुगंधित कर दूंगी, शिशु; जरूरत होगी तो स्वंय उसमे होम हो जाऊँगी, पर तुम नहीं डरोगे, मुझे वचन दो, अपने को नहीं सताओगे- डर से नहीं, परिताप से नहीं... और हाँ, प्यार से भी नहीं- वह तुम्हे क्लेश दे तो उसे भी हटा देना ! तुम देवत्व की साँस हो, देवत्व की शिखा हो जिसे मैं अंतःकरण मे पालूँगी...'[7(७)]

वेदना, दुःख एंव पीड़ा प्रेम को पराकाष्ठा तक पहुँचाता है, प्राप्ति ही प्रेम की कसौटी नहीं हो सकता। विरह में ही प्रेम की सच्चे अनुभूति को आत्मसात किया जा सकता है। भुवन के साथ जीवन नदी में सेतु बांधने की कल्पना में प्रतीक्षारत गौरा अपनी सम्पूर्ण जीवन में कभी भी कोई आक्षेप नहीं करते, काल के प्रवाह में बहती हुई इस सिलसिले में गौरा के हृदय में एक स्थिर विश्वास तथा सिद्धांत भी है कि जरूर एक दिन उसकी जीवन नदी में भुवन नाम का एक द्वीप खिलेगा। मसूरी में गौरा के घर में बिताये सात दिन की अवधी ने भुवन जैसे एक तटस्थ युवक को आत्मस्वीकृति करने पर मजबूर कर देते हैं। उस महत्वकांक्ष क्षण की आत्मोपलब्धि भुवन को नई सिरे से जीवन की सारी पीड़ा भूलकर गौरा के प्रति समर्पित होने का संदेश भी उपन्यास के अंत में दिखाई पड़ते हैं।

भुवन की संवेदना को झकझोर कर डालनेवाले रेखा के व्यक्तित्व से प्रभावित भुवन एकांत में प्रायः रेखा से मिलने की क्रियाएं, तुलियन झील में दोनों के बीच हुए सम्भोग कार्य, रेखा द्वारा बार-बार उन दोनों के रिश्ते के नाम के बारे में पूछने के बाद भी सटीक उत्तर न देना, इसी बीच गौरा के साथ सुसंबंध रखना, कास्मिक रश्मि के खोज के बहाने गौरा से भी दूर भाग जाना इत्यादि भिन्न कारणों से भुवन के प्रति सहज ही सहृदय पाठक के मन में तरह तरह के सवाल उठते हैं। आज के आधुनिक जीवनबोध के लक्षण से सम्पृक्त पात्रों की मनःस्थिति, संवेदनाओं से प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों में साम्यता हैं। इस कसौटी पर अगर भुवन को कठघरे में खड़ा करे तो सहृदय पाठक प्रस्तुत उपन्यास के आदि से अंत तक उसे एक अधूरेपन के साथ ही मिलते है, न जाने क्योंभुवनकोई एक भी कार्य पराकाष्ठा तक ले जाने में समर्थ नहीं हो पाए।

अपनी संबंध को लेकर रेखा जितनीगंभीर थीशायद भुवन ने रेखा की वह चेतना को समझने में गलती कर दी होया वह समझने की कोशिश ही नहीं की। एक उच्चशिक्षित महिला होनेकी नाते विवशहोकर भुवन के द्वाराबढ़ाया विवाहप्रस्ताव कोरेखा द्वारानकारने में कोई आश्चर्यचकितहोने का कारण हमे नहीं दिखाई पड़ते क्योंकिरेखा भुवन के ऊपर कोई बोझ बनना नहीं चाहती थी। जीवन केअनेक मूल्यवानक्षण कस्मिक रश्मि केशोध मेंबीता दिए परन्तु भुवन के वह शोध कार्यका परिणाम क्या हुआ, या वह भी अधूरेपन में ही समाहित हो गए ? एक मिलिटरी अफसर बनकर युद्ध में भुवन अपने देश की रक्षा के लिए कुछ करने की कोशिश तो की लेकिन इस नाजुक क्षण में भी हमे भुवन को अधूरेपन में ही मिले। और गौरा ! खेर गौरा तो समय के प्रवाह में भुवन केअधूरेपन कोसाथ लेकर हीसमाहित हो गई अनंत काल तक।

नदी के द्वीप उपन्यास के पात्रों में प्रेम से ज्यादा वासना का प्रभाव अधिकतर है। भुवन, रेखा, चन्द्रमाधव आदि पात्रों में वासना प्रधान प्रणय संवेदना का आधिक्य ही नजर आते हैं। हाँ एकमात्र पात्र गौरा जो भुवन को एक देवशिशु के रूप में अंतःकरण से मानती है, जिसके लिए वह वर्षों से मौन साधना में व्रती भुवन की उपासिका के रूप में प्रतीक्षारत होता हुआ नजर आते है। विरह वेदना में तपती हुई उस पपीहा या चातक पक्षी की तरह जान पड़ते हैं जो मेघमल्ला से बारिश की पहली बुँदे पीने के लिए अपेक्षारत होते हैं। ठीक उसी तरह गौरा भी इन्तेजार करेगी। जीवन नदी के प्रवाह में भुवन और गौरा दोनों ओर से पूल बांधने की संकल्प लेते है; उस महत्वाकाक्ष क्षण, उस सम्पृक्त के क्षण की अनुभूतियाँ अपने आप में बहुत मूल्यवान है, चाहे उस मूल्यवान क्षण के लिए कितनी लम्बी प्रतीक्षा क्यों न करना पड़े।

द्वितीय विश्व युद्ध के फलस्वरूप सहज-सरल जीवन शैली से नाता रखता हुआ समाज के कुछ लोगों के सोच में अनेक नकारात्मक परिवर्तन हुए और इसी बीच एक नई वर्ग प्रकट हुए, जिसको हम तत्कालीन भारतीय मध्यमवर्गीय भोगवादी समाज कह सकते हैं, प्रस्तुत उपन्यास में चन्द्रमाधव उसी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र है। मध्यमवर्गीय भारतीय समाज में पनपते हुए सांसारिक विघटन, जीवन मूल्य के विघटन में चन्द्रमाधव जैसे नकारात्मक पात्रआज के समाज में भी काफी मात्रा में उपलब्ध हैं। चन्द्रमाधव एक अत्यंत अस्थिर, वासनालोलुप चरित्र है जो अपने वासना चरितार्थ करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। वह अपनी शारीरिक क्षुधा को मिटाने के लिए रेखा की ओर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, परन्तु इस दिशा में नाकामियाब हो कर चन्द्रमाधव रेखा के पीठ-पीछे बहुत बड़ा षड्यंत्र करता हैं। रेखा और भुवन के बीच बढ़ती हुई सम्पर्क से ईर्ष्यानित चन्द्रमाधव उन दोनों के रिश्ते में दरार पैदा करने के लिए हर सम्भव कोशिश करते हैं। चन्द्रमाधव जैसे मौकापरस्त इंसान के लिए किसी के व्यक्तिगत जीवन वोध तथा संवेदनाओं की कोई अहमियत नहीं है। आज के कठिन जीवन शैली में ऐसे व्यक्ति के मानसिक सोच के परिणामस्वरूप जीवन मूल्य में उलझन और भी बढ़ गयी है। दराचलतः चन्द्रमाधव की संवेदनाओं में ऋणात्मकता का प्रभाव पूर्ण रूप से परिलक्षित होते हैं।

निष्कर्ष

जिस समय पाठकगण शेखर: एक जीवनी उपन्यास के तीसरी भाग को लेकर बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, जिस समय पाठकों के सामने एक ही प्रश्न घूम-फिर रहा था, क्या शेखर को फांसी हो गया? ठीक उसी समय अज्ञेय ने अचानक एक नई मोड़ लेकर, एक नए चिंतन के साथ पाठकों के हाथ में नदी के द्वीप उपन्यास को थमा दिया। शेखर; एक जीवनी उपन्यास का तीसरी भाग न मिलने पर पाठकगण खफा तो हुए लेकिन नदी के द्वीप उपन्यास में नई सिरे से परोचा गया पात्रों के संवेदनाओं की मनोविश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति से सहृदय पाठक को बहुत बड़ी राहत मिली और उपस्थापन शैली की विशिष्टाओं ने पाठक में एक नई उमंग भर दिए। प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के चेतनाश्रोत का अंतहीन प्रवाह के साथ सहृदय पाठक तादात्म्य का अनुभव करते हैं। आधुनिक युगबोध में व्यक्ति मूलतः वाह्यिक दृष्टिकोण को परखने की उपेक्षा आंतरिक जगत के चेतना के साथ परिचित होना चाहते हैं। अपनी निजी स्थिति को समाज में एक पहचान देने के लिए आज हमें हर हालत में मैं-पन को एक औझार बनाके लड़ाई करना पड़ता हैं और इसी लिए भुवन, रेखा, गौरा, चन्द्रमाधव आदि पात्र हमारे अपने जीवन प्रवाह के अधिक निकट है। प्रस्तुत उपन्यास के उपलब्ध पात्रों के संवेदना मूलतः आज के आधुनिक मानव की विशेष वर्ग के संवेदनाओं से साम्यता रखते हैं। नदी के द्वीप उपन्यास में प्रत्येक पात्र अपनी स्वतंत्र अस्तित्व को लेकर व्यस्त दिखाई पड़ते हैं, चाहे वह स्त्री पात्र हो या फिर पुरुष पात्र। स्वतंत्र जीवन, स्वनिर्भरशीलता, स्वयं निर्णय लेने की क्षमता आदि से प्रस्तुत उपन्यास के स्त्री पात्र किसी भी पुरुष पात्र के आगे झुकता हुआ नजर नहीं आते। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की स्वाधीनता के प्रति जो आधुनिक दृष्टिकोण प्रतिबिंबित हुआ हैं वह उपन्यासकार का एक बड़ी उपलब्धि हैं। उपन्यासकार ने सभी पात्रों को अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने के लिए पूर्ण स्वाधीनता दे रखा है लेकिन पात्रों को ऐसा कोई कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करते जिसके द्वारा समाज में कोई आँच आये। रेखा का गर्भपात, भुवन का आत्मिक क्षण में डर का अनुभव होना, रेखा के प्रति आंतरिक अनुभूतिओं से एकात्महोने पर भी पूर्ण रूप से भुवन उसको स्वीकार न कर पाना, डॉ. रमेश चंद्र से रेखा का पुनः दाम्पत्य जीवन की शुरुआत आदि विभिन्न विन्दुओं पर नजदीकियों से ध्यान दे तो प्रस्तुत उपन्यास एक व्यक्ति

[7] **नदी के द्वीप**, **पृष्ठ: ३०३-३०४**

चरित्र का दस्तावेज होने पर भी तत्कालीन समाज के प्रति दायित्यबोध के भावनाओं ने कुछ हद तक पात्रों को नियंत्रित भी किया है। उपन्यासकार अज्ञेय एक समाज सचेत व्यक्ति होने के नाते पात्रों को सामाजिक दायरे के बाहर आने की अनुमति नहीं दी है। द्वीप कितना भी बड़ा क्यों न हो वह हमेशा नदी में ही अपनी स्थिति पाती है, नदी चाहे तो किसी न किसी दिन द्वीप को अपने में समाहित कर सकते हैं लेकिन कभी भी द्वीप नदी को अपने अंदर समाहित नहीं कर सकते। द्वीप अपनी द्वीपवत स्थिति की सुरक्षा के लिए संग्राम करना ही पड़ेगा, अनंत काल तक, ठीक उसी तरह व्यक्ति भी समाज जीवन की धारा में निरंतर बहते हुए भी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए सदा संघर्ष करने में बाध्य है, यही समय की मांग है। वस्तुतः नदी के द्वीप उपन्यास केंद्रीय चार पात्रों के अलग अलग संवेदनाओं से पुष्ट एक सार्थक तथा सदियों तक प्रासंगिक उपन्यास कहना अधिक यथार्थ होगा। आज भी रेखा, भुवन, गौरा, चंद्रमधाव जैसे अनेकों चरित्र हमारे समक्ष इर्द-गिर्द दिखाई पड़ते हैं जिससे उसकी प्रासंगिकता का प्रसंग अपने आप में शमन हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, नदी के द्वीप, १९५१ सरस्वती, २०००.
2. डॉ. देव कृष्ण मौर्य, उपन्यास शिल्पी अज्ञेय, शैलजा प्रकाशन, २००६.
3. डॉ. शंकर वसंत मुद्गल, अज्ञेय का काव्य-भाव एवं शिल्प, अमन प्रकाशन, १९९८
4. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्रा, अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, विद्यामंदिर, २००५.
5. डॉ. ज्वाला प्रसाद खेतान, अज्ञेय एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९९०.
6. डॉ. ज्वाला प्रसाद खेतान, अज्ञेय शिखर अनुभूतिया, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९९९.
7. डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्रा. अज्ञेय के उपन्यास, संजय बुक सेंटर, २००९.